ख्यालों को यूं खूबसूरत करें...

गतांक से आगे...

हम बात कर रहे थे कि सकारात्मक विचार मिलेंगे कहां से? उसका स्रोत क्या है? उस स्रोत को खोजने की आवश्यकता है। जिस तरह से नकारात्मक सोच का आधार नकारात्मक सूचनायें हैं, नकारात्मक बातें हैं उसी तरह सकारात्मक सोच का आधार आध्यात्मिक चिंतन है। सकारात्मक माहौल है। श्रेष्ठ संग है, अच्छी किताबें हैं। जब उसको पढ़ते हैं तो हम उस दिशा में आगे बढ़ते हैं। अन्यथा आप देखो तो मनुष्य के मन के पास अथाह शक्ति और क्षमता है। आज दुनिया के अन्दर मनुष्य ने जितना भी विकास किया, जितनी भी खोजें की, वो तभी कर पाया जब उसने अपने मन को उस दिशा में, उस विषय पर एकाग्र किया। और उससे कनेक्टेड सारी बातें हासिल की तब उसका चिंतन धीरे-धीरे उसे ऊंचाई तक ले गया।

आज विज्ञान इतना विकसित हो गया है। इसी तरह आज मन के पास जो शक्ति और क्षमता है उस शक्ति और क्षमता को कहीं हम नकारात्मक और व्यर्थ बातों में तो नहीं गंवा रहे! तभी भगवान ने गीता में कहा कि हे अर्जुन! आत्मा स्वयं का मित्र है, स्वयं का शत्रु है। वो मन का मित्र कब बनता है जब मन सहित कर्मेन्द्रियां जीती हुई हैं। और जब मन सहित इन्द्रियां विचलित हैं, चंचल हैं तब वो स्वयं का शत्रु बन जाता है। तो इसीलिए मन के हारे-हार है और मन के जीते जीत। ऐसा कहा जाता है। मन से हारे-हार कैसे है, मन से जीते जीत कैसे है? कोई भी युद्ध पहले यहाँ से आरम्भ होता है। अगर यहाँ हमने हार स्वीकार कर ली तो जीवन के अन्दर हार ही मिलेगी। अगर ख्यालातों में हमने कामयाबी स्वीकार कर ली, जीत स्वीकार कर ली तो ज़रूर हर हारी बाज़ी को भी हम जीत लेते हैं। तो इसीलिए वर्तमान समय को देखते हुए हमें अपने मन से हमेशा ऐसे विचारों को जन्म देना है जिससे हर बाज़ी को हम जीत सकते हैं। और आध्यात्मिक चिंतन, आध्यात्मिक बातें, आध्यात्मिक ज्ञान, आध्यात्मिक प्रज्ञा हमारे उन चक्षु को खोल देते हैं जिससे हमें उस सुनहरी दुनिया का साक्षात्कार होने लगता है। कहा जाता है कि एक बार एक छोटा-सा राज्य था और उस छोटे से राज्य के अन्दर बड़ा सुकून था। लेकिन एक बड़े से राज्य वाले राजा ने सोचा कि इस छोटे से राज्य को भी मैं अपने वश में कर लेता हूँ। तो अचानक उसने आक्रमण कर दिया। और वहाँ का राजा परेशान हो गया कि हमारी सेना तो बहुत छोटी-सी है। ये तो बहुत बड़ा राजा है, बहुत बड़ा राज्य है, बहुत बड़ी सेना है। उसने अपने सेनापति को बुलाकर कहा कि अब क्या करें हम? तो सेनापति ने तो पहले ही कह दिया कि उनकी सेना इतनी विशाल है, हमारी सेना से दुगुनी है तो हम इनके ऊपर जीत प्राप्त नहीं कर सकते। बेहतर है कि हम उनकी शरण में चले जायें। राजा को मंजूर तो नहीं था

ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

सचमुच एक विचार से व्यक्ति की सारी ज़िंदगी बदल जाती है।

लेकिन अब सेनापति ने हार स्वीकार कर ली तो क्या किया जाये।

राजा अपने गुरु के पास गया और गुरु से हाथ जोड़कर निवेदन किया कि ऐसी घड़ी में, ऐसे हालात में हम क्या करें? तो गुरु ने कहा कि सेनापति क्या कह रहे हैं? उन्होंने कहा कि हम बड़े राजा की शरण स्वीकार कर लें। तो गुरु ने कुछ घड़ी सोचकर कहा आपकी सेना का सेनापति हटाओ और मैं आपकी सेना का नेतृत्व करूंगा। राजा ने कहा कि आप करेंगे! तो गुरु ने कहा कि हाँ, मैं करूंगा। राजा ने सोचा कि गुरु जी ने कभी घोड़ा भी नहीं चलाया लेकिन अभी गुरु जी कह रहे हैं तो उनकी आज्ञा को तो मानना पड़ेगा। और इसीलिए राजा ने उस सेनापति से कहा कि तुम पीछे हट जाओ, गुरु जी अब इस सेना का नेतृत्व करेंगे। गुरु जी जैसे ही आगे बढ़े सेना के साथ तो बीच में एक ऐसी पहाड़ी आई जिस पर एक मंदिर था। गुरु जी वहाँ रुके और सेना से कहा कि मैं ईश्वर के दर्शन करके आता हूँ। उनका आर्शीवाद लेकर आता हूँ कि हम सभी युद्ध में जा रहे हैं। आप थोड़ी देर रुको यहाँ पर। वो पहाड़ी चढ़कर ऊपर मंदिर में गये और कुछ समय के बाद नीचे आ गये। सेना वालों ने पूछा कि गुरु जी भगवान ने कुछ कहा? तो बोले हाँ कहा। गुरु जी ने बताया कि हमें इंतज़ार करना होगा। तो बोले किस बात का? भगवान ने कहा कि जब सूरज ढल जाये और यहाँ से प्रकाश निकला तो समझ लेना कि आपकी जीत है। अगर मंदिर में अंधेरा ही रहा तो समझ लेना कि हार है।

तो सब इंतज़ार करने लगे कि अब भगवान जवाब देने वाले हैं कि हमारी जीत है या हार है। उसी के आधार से हम आगे बढ़ेंगे। जैसे ही अंधेरा हुआ तो मंदिर से प्रकाश निकलने लगा तो सारी सेना में इतना उमंग भर गया, इतनी खुशी भर गयी कि अरे भगवान ने कह दिया कि अब हम ये युद्ध जीतने वाले हैं। एक ऐसा जोश उनके अन्दर आ गया। और उन्होंने उस सेना के ऊपर ऐसा आक्रमण किया जिससे उस सेना पर विजयी हो गये। जब विजयी होकर वापिस लौट रहे थे तो सैनिकों ने गुरु जी से कहा कि गुरु जी ईश्वर का धन्यवाद तो करके आयें। तो गुरु जी ने कहा कि अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने पूछा क्यों? गुरु जी बोले क्योंकि वो दीया मैं ही जलाकर आया था। क्योंकि मुझे पता था कि आप सभी सामने वाले की सेना को देखकर इतने भयभीत हो गये और इसीलिए यहाँ हार स्वीकार हो गयी तो जीत प्राप्त करना बहुत मुश्किल है। इसलिए यहाँ जीतना ज़रूरी था। इसीलिए वो दीया जब जलाया तो दिन में तो प्रकाश दिखना नहीं था, अंधेरा हुआ तो प्रकाश दिखने लगा। और आप सबने मन से ये स्वीकार कर लिया, जीतने का विचार जो मन में आ गया तो एक ऐसा जोश अन्दर में आया कि उनकी दुगुनी सेना होने के बावजूद भी हम जीत गये। तो मन से जीते-जीत है, मन से हारे-हार है। इसीलिए ख्यालातों को खूबसूरत बनाओ तो ज़िंदगी खूबसूरत हो जायेगी। लेकिन अगर ख्यालातों में ही नकारात्मकता होगी तो ज़िंदगी भी अवसाद में पहुंच जायेगी। चुनाव हमारा अपना है।

बलौदा-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित 'किसान सम्मान समारोह' में ब्र.कु. मंजू दीदी,बिलासपुर, जनपद सदस्य मंगताराम जांगड़े, कृषि विकास अधिकारी ए.डी. दीवान, ढ़ोरला के मुख्य किसान रूद्र प्रताप सिंह, सरपंच बबीता साहू, राकेश गुप्ता,तखतपुर, शिक्षकगण तथा बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे।

ब्रह्मपुर-पीयूआरसी(ओडिशा)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसानों के लिए आयोजित स्नेह मिलन एवं सम्मान कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अशोक राय,चीफ मैनेजर,टाटा ग्रुप, राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी,उपक्षेत्रीय संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़, राजयोगिनी ब्र.कु. माला दीदी,निदेशिका,प्रभु उपहार रिट्रीट सेंटर, ब्र.कु. ऋषिकेश साहू,कृषक तथा बड़ी संख्या में किसान एवं अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NO: - 30826907041
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH:- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya,Shantivan
Note:- AfterTransfer send detail on E-Mail -omshanti-media.acct@bkivv.org or
Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087

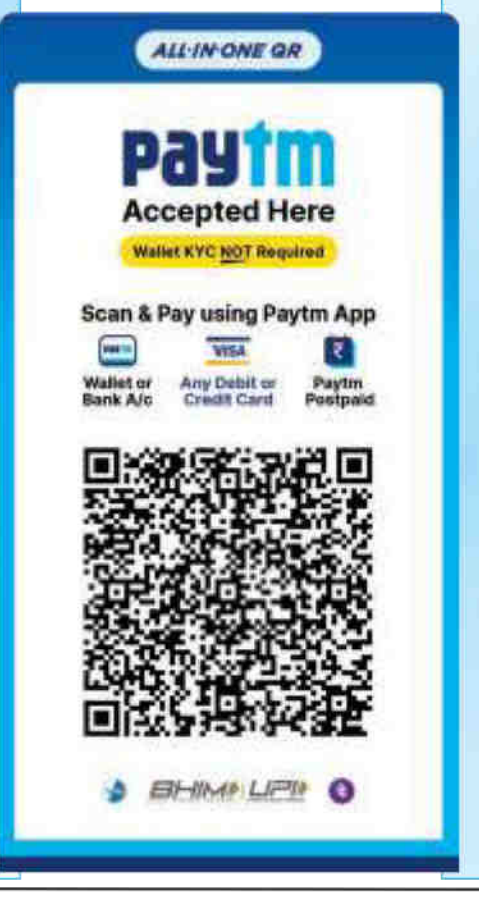

देगलूर-महा.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसानों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम के दौरान सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मेनका बहन, ब्र.कु. विद्या बहन, किसान भारती प्रदेश अध्यक्ष तथा पूर्व विधायक शंकर अण्णा धोंडगे, पूर्व पंचायत समिति सभापति शिवाजीराव देशमुख, कृषि अधिकारी सोमेश्वर गिरी, नगर सेवक शैलेष उल्लेवार, पी.आई. सौहम माचरे, अनिल पाटील रामपुरकर, डॉ. सुनील, ब्र.कु. राम भाई, ब्र.कु. चंद्रकांत मोरे तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों सहित बड़ी संख्या में किसान भाई उपस्थित रहे।

अरेराज-बिहार। राष्ट्रीय किसान दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में किसान भाई-बहनों को सम्मानित करने के पश्चात् उपस्थित हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मीणा बहन।

हज़ारीबाग-झारखण्ड। राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसान भाइयों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में गांव के मुखिया, ग्राम पंचायत के सदस्य, वार्ड पार्षद तथा मुख्य किसान सहित ब्र.कु. हर्षा बहन, ब्र.कु. तृप्ति बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

इंदौर-क्षिप्रा(म.प्र.)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसान के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए समाज सेवी विष्णु पटेल, पत्रकार दिनेश डाबी, ब्र.कु. अनीता बहन, ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. सविता बहन तथा अन्य।